विचार बिन्दु

कर्म, ज्ञान और भक्ति- ये तीनों जहाँ मिलते हैं वहीं सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ जन्म लेता है। -अरविंद

रामचरितमानस की समकालीन व्याख्या के दार्शनिक सूत्र

रामचरितमानस पर विगत शताब्दियों में असंख्य टीकाएँ, भाष्य और प्रवचन हुए हैं-किंतु उनमें अधिकांश या तो कथा-प्रवाह के रूप में सीमित रहे हैं, या केवल धार्मिक और भावनात्मक पक्ष को ही प्रतिध्वनित करते रहे हैं। समकालीन वैश्विक विमर्शों-जैसे मानव उत्कर्ष, आत्मबोध, नैतिक नेतृत्व, संज्ञानात्मक विज्ञान, प्रसन्नता का विज्ञान, प्रज्ञा का विज्ञान, जीवन में अर्थ की अनुभूति और नैतिक निर्णय का मनोविज्ञान आदि-के आलोक में मानस के सैद्धांतिक पद्यों की गूढ व्याख्या की जो आवश्यकता थी, वह अब तक उपेक्षित रही है। यह प्रस्तुति इस रिक्ति की पूर्ति का एक निष्ठावान प्रयास है-जिसमें तुलसीकृत पदों को आधुनिक मानव के बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक और सामाजिक जीवन से इस प्रकार जोड़ा गया है कि वे पूज्य रहकर भी प्रयोज्य बनें; केवल कथ्य न रहकर पथ्य बनें। ऐसी समन्वित, संवादधर्मी और तात्त्विक व्याख्या पूर्ववर्ती परंपरा में दुर्लभ है-और संभवत: पहली बार इस प्रकार के विमर्श में मानस को वैश्विक और समसामयिक अर्थ-स्तरों पर प्रतिष्ठित किया गया है।

नवोन्मेषी, तात्त्विक और समसामयिक दृष्टिकोण से की गई रामचरितमानस की यह व्याख्या आज के वैश्विक परिदृश्य में केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक, पर्यावरणीय और वैश्विक शांति के स्तर पर भी एक गहन मार्गदर्शक बनकर उभरती है। आज जब विश्व समाज मानसिक स्वास्थ्य संकट, सामाजिक विषमता, आर्थिक असंतुलन, नैतिक भ्रम, पारिवारिक विघटन, पर्यावरणीय पतन और अंतरराष्ट्रीय तनावों के दौर से गुजर रहा है-तब मानस का यह पुनर्पाठ आत्मबोध, करुणा, अर्थपूर्ण जीवन, और विवेकपूर्ण निर्णय की ओर एक ठोस सांस्कृतिक-सांवैधानिक सेतु प्रस्तुत करता है,जो मानव उत्कर्ष के समकालीन वैज्ञानिक प्रतिमानों से गहराई से मेल खाता है।

सामाजिक स्तर पर यह व्याख्यासम्मान, संवाद और समावेशिता के माध्यम से सामाजिक बंधुत्व और न्याय आधारित सह-अस्तित्व को पोषित करती है। आर्थिक क्षेत्र में यहसीमित उपभोग, नैतिक उत्पादन और सहकारी विकास की प्रेरणा देती है। पारिवारिक जीवन में यह स्नेह, श्रम और सम्मान के तंतु बुनती है, जो सामूहिक मानसिक स्वास्थ्य और आपसी विश्वास की आधारशिला बनाते हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से मानस की के माध्यम से पृथ्वी को धर्मस्वरूप मानने की चेतना को पुनर्स्थापित करती है-जो आधुनिकपारिस्थितिक नैतिकता और जलवायु न्याय से सीधे जुड़ती है। यह दृष्टि प्रकृति के साथ युद्ध नहीं, संवाद और संतुलन को प्राथमिकता देती है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर-जहाँ युद्ध, उग्रवाद, और सभ्यताओं के संघर्ष की आशंकाएँ गहराती जा रही हैं-रामचरितमानस की यह मानवतावादी व्याख्या परहित सरिसधरमनहिं भाई जैसे मूल्यों को विश्व चेतना में स्थापित कर सकती है। यह शांति केवल युद्धिवराम नहीं, बल्कि अंत:शांति, सांस्कृतिक सहिष्णुता, और नैतिक कूटनीति के मार्ग से आती है। इस संदर्भ में मानस की यह प्रस्तुति वैश्विक शांति-निर्माण और संघर्ष-परिवर्तन के लिए एकनैतिक-दार्शनिक ढांचा प्रदान करती है। इस प्रकार यह समन्वित व्याख्या रामचरितमानस को केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि 21वीं सदी की बहुआयामी वैश्विक चुनौतियों-मानवता, प्रकृति और विश्व व्यवस्था-के समाधान का एक जीवंत स्त्रोत बनाकर प्रस्तुत करती है। यह अतीत के शाश्वत सत्य को वर्तमान की भाषा में अनुवादित कर भविष्य की दिशा प्रस्तावित करती है-जहाँ आस्था और बौद्धिकता, परंपरा और नवोन्मेष, भारत और विश्व-एक ही संवाद में समाहित हो सकें।

रामचरितमानस केवल एक भक्तिग्रंथ नहीं, अपितु भारतीय चेतना की बहुलवर्णी धारा है, जिसमें शब्द केवल वर्ण नहीं,जीवित मूल्य बनकर प्रवाहित होते हैं। यह काव्य उस सांस्कृतिक आत्मा का साक्षात् रूप है, जो युगों-युगों से मानव को केवल ईश्वर की ओर नहीं, अपने भीतर की समष्टिगत दिव्यता की ओर ले जाती रही है। इसके पद्यरूप-दोहा, चौपाई, सोरठा और विविध छंद-जैसे विभिन्न स्तरों पर एक ही सत्य की बहुभाषिक अभिव्यक्ति हैं। उनमें कथा की सरलता, भावना की तीव्रता और सिद्धांत की गंभीरता का ऐसा त्रिवेणी-संगम है, जो मानस को केवल पाठ नहीं, प्रज्ञा, प्रेम और पुरुषार्थ का अद्वितीय प्रकाशपुंज बना देता है। इसीलिए, इस व्याख्या का ध्येय केवल व्याख्यान नहीं, आत्मसात् है-जिसमें हम मानस के सैद्धांतिक पद्यांशों को समकालीन दृष्टिकोण से देखने का साहस करें, और उन्हें जीवन में उतारने की दिशा प्राप्त करें।

रामचरितमानस की रचना केवल एक काव्य नहीं, अपितु एक समग्र जीवन-दर्शन है, जो भाषा, भक्ति और बुद्धि को समान रूप से आलोकित करता है। इसमें प्रयुक्त दोहे, चौपाइयाँ, सोरठे और छंद केवल भावनात्मक कविता नहीं हैं, वे अर्थ, भावना और दृष्टि के वाहक हैं। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में ऐसी रचनात्मक संरचना की है जो कथा, भावना और सिद्धांत-तीनों को समान समर्पण से प्रस्तुत करती है। यदि हम इसकी पद्यिवन्यास को अंतर्वस्तु के आधार पर देखें, तो मोटे रूप में तीन प्रकार के पद्य-कथानक, भावप्रधान और सैद्धांतिक-स्पष्ट होते हैं।

आज जब मानवता बाह्य साधनों की प्रचुरता और आंतरिक दिशाहीनता-दोनों के द्वंद्व में उलझी हुई है, तब रामचरितमानस के सैद्धांतिक अंश हमें स्थायित्व, विवेक और करुणा की पुन:स्थापना का आव्हान करते हैं। यह ग्रंथ हमें स्मरण कराता है कि अध्यात्म केवल सन्यास नहीं, अपितु संलग्न कर्म में सार्थकता की खोज है; कि भक्ति केवल भावुकता नहीं, अपितु समर्पित विवेक का नाम है; और कि जीवन की प्रत्येक चुनौती-चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक-उसकी गूंज मानस की किसी चौपाई में पूर्वाभासित है।

कथानक अंशों में रामकथा के विविध प्रसंग-जैसे श्रीराम का जन्म, वनगमन, युद्ध और राज्याभिषेक-का प्रवाह होता है। ये चौपाइयाँ कथा की गति को वहन करती हैं, पर वे केवल घटनाओं का विवरण नहीं, नैतिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करती हैं। ये पद्य आज के समय में लोकहितकारी नेतृत्व जैसे विचारों को प्रत्यक्ष या प्रतीकात्मक रूप में प्रकट करते हैं।

भावप्रधान अंश मानस की आत्मा हैं। ये वे पद्य हैं जो श्रद्धा, प्रेम, करुणा, त्याग और भक्ति जैसे भावों को गहराई से स्पर्श करते हैं। ये केवल भक्तिपूर्ण अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि पूर्ण आत्मसमर्पण और आत्म-दया की उस परंपरा से जुड़ी हैं जो आज मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति के विमर्शों में अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती है।

परंतु सबसे महत्वपूर्ण और आज के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी, मानस के सैद्धांतिक पद्य हैं। यहीं वह गूढ़ तत्व प्रकट होता है जो रामचरितमानस को एक सार्वकालिक जीवन-संहिता बना देता है। इन अंशों में तुलसीदास ने वैदिक ज्ञान, उपनिषदों की तत्व मीमांसा, भक्ति-सूत्रों की भावना और योगदर्शन की मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टियों को अत्यंत सरल अवधी भाषा में प्रस्तुत किया है। यह केवल आध्यात्मिक अनुभूति नहीं, बल्कि संज्ञानात्मक-भावनात्मक आरोपण का सूत्र है-जिससे यह समझा जा सकता है कि व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही अनुभव करता है। उसकी चेतना जिस प्रकार ढली होती है, उसी प्रकार उसका ईश्वर, संसार और स्वयं का बोध निर्मित होता है।

इन सैद्धांतिक अंशों को समकालीन संदर्भ में समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि आज मानवता केवल बाह्य संसाधनों से नहीं, आंतरिक क्षमताओं से भी संघर्ष कर रही है। आज का वैश्विक विमर्श मानव उत्कर्ष की ओर उन्मुख है, जिसमें केवल शारीरिक या आर्थिक सफलता नहीं, बल्कि भावनात्मक संतुलन, आत्मबोध, नैतिक स्पष्टता, संबंधबुद्धि और उद्देश्यपरक जीवन को मिलाकर समग्र जीवन की परिकल्पना की जाती है। रामचरितमानस के सैद्धांतिक पद्य इसी दिशा में सूक्ष्म और प्रासंगिक मार्गदर्शन देते हैं।

नीतिपरक कथनों में संबंधों की परीक्षण-क्षमता, गुणधर्म आधारित नैतिकता और संकट में धैर्य एवं दृढ़ता जैसे तत्त्व अंतर्निहित होते हैं-जो आज के नेतृत्व और मनोविज्ञान के केंद्र में हैं। ये केवल आदर्श स्थापित नहीं करते, बल्कि मूल्याधारित प्रतिक्रिया को संभव बनाते हैं।

इसी प्रकार समावेशी चेतना और गहन सहानुभूति जैसी अवधारणाएँ, जो आज के वैश्विक नैतिक विमर्श का आधार हैं, मानस के उन सूत्रों में सहजता से व्यक्त होती हैं जहाँ प्रत्येक प्राणी को राममय देखा जाता है। यह दृष्टि केवल धार्मिक सहिष्णुता नहीं सिखाती, बल्कि आंतरिक गरिमा और सार्वभौमिक सम्मान का अभ्यास कराती है।

समकालीन वैश्विक दर्शन में भी वही अंतर्दृष्टियाँ अब पुन:प्रगट हो रही हैं-जैसे अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में अर्थ-रचनाकी भूमिका, सकारात्मक मनोविज्ञान में कृतज्ञता, करुणा और उद्देश्य, तंत्रिका-विज्ञान में ध्यानात्मक अवस्थाओं द्वारा मानसिक लचीलापन और सार्वजनिक नैतिकता में गरिमा-आधारित नेतृत्व आदि हैं। रामचरितमानस के सैद्धांतिक पद्य इन सभी से गहन संवाद करते हैं-उनसे टकराते नहीं, बल्कि उन्हें नवाचारी, कल्याणकारी और पूरक दृष्टि प्रदान करते हैं।

इसलिए जब मैं रामचरितमानस के सैद्धांतिक अंशों की समकालीन व्याख्या करता हूँ, तो मेरा उद्देश्य केवल परंपरा का अनुकरण करना नहीं, बल्कि संवादात्मक ज्ञान का अभ्यास करना है। यह प्रयास इस विश्वास से प्रेरित है कि मानस न तो केवल पूज्य ग्रंथ है, न केवल सांस्कृतिक स्मृति है। यह एक जीवंत जीवन-व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति की चेतना, उसका चरित्र और उसका समुदाय-तीनों के लिए गहरा मार्गदर्शन समाहित है। यदि हम इसे केवल पूजेंगे, तो यह मूर्ति बनकर रहेगा। यदि इसे समझेंगे, तो यह दर्पण बनेगा। और यदि इसे जीएँगे, तो यह जीवन-पद्धति बन जाएगा-जिससे न केवल व्यक्ति, बल्कि समाज और संस्कृति-तीनों स्पष्टता, श्रद्धा और विवेक के साथ समृद्ध हो सकेंगे। यही मानस का समकालीन और वैश्विक सत्य है।

आज जब मानवता बाह्य साधनों की प्रचुरता और आंतरिक दिशाहीनता-दोनों के द्वंद्व में उलझी हुई है, तब रामचरितमानस के सैद्धांतिक अंश हमें स्थायित्व, विवेक और करुणा की पुन:स्थापना का आव्हान करते हैं। यह ग्रंथ हमें स्मरण कराता है कि अध्यात्म केवल सन्यास नहीं, अपितु संलग्न कर्म में सार्थकता की खोज है; कि भक्ति केवल भावुकता नहीं, अपितु समर्पित विवेक का नाम है; और कि जीवन की प्रत्येक चुनौती-चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक-उसकी गूंज मानस की किसी चौपाई में पूर्वाभासित है। जब हम इन गूढ़ पद्यों को समकालीन संदर्भ में समझते हैं, तो न केवल ग्रंथ जीवंत होता है, बल्कि हम स्वयं भी अधिक जागरूक, उत्तरदायी और करुणाशील मानव बनते हैं। यही रामचरितमानस की सार्वकालिक और सार्वभौमिक विजय है-कि वह समय के साथ, हर युग के साथ और अधिक प्रासंगिक हो उठता है।

व्याख्या जारी रहेगी!

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कोटा में दुर्लभ सिक्कों, नोटों और डाक टिकटों की प्रदर्शनी का शुभारंभ

प्रदर्शनी में प्राचीन मौर्यकालीन सिक्कों से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक चंदा कूपनों का अनोखा संग्रह प्रदर्शित किया गया है

कोटा, (निसं)। स्टैम्प्स, कॉइन्स, नोट्स सोसाईटी (एसएनसी) कोटा के तत्वावधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन शनिवार से एक होटल में प्रारंभ हुआ, जो 31 अगस्त तक आयोजित किया जाएगा। प्रदर्शनी का औपचारिक शुभारंभ भाजपा शहर जिलाध्यक्ष राकेश जैन द्वारा किया गया। इस तीन दिवसीय आयोजन में प्राचीन और मध्यकालीन भारत की ऐतिहासिक झलक देखने को मिल रही है। प्रदर्शनी में सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले प्राचीन सिक्कों से लेकर मुगल सल्तनत, ब्रिटिश हुकूमत और स्वतंत्र भारत द्वारा जारी विभिन्न ऐतिहासिक व अत्यंत दुर्लभ सिक्कों का नायाब संग्रह प्रदर्शित किया गया है। इसके अलावा, देश के राजनीतिक इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कई अहम दस्तावेज भी यहाँ दर्शाए गए हैं, जिनमें स्वराज पार्टी, भारतीय जनसंघ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक चंदा कूपन विशेष आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

कोटा में तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय दुर्लभ सिक्कों, नोटों और डाक टिकटों की प्रदर्शनी लगी है।

- **देश के राजनीतिक इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कई अहम दस्तावेज भी दर्शाए गए हैं**
- **प्रदर्शनी में राजाओं के जमाने की एक दुर्लभ प्राचीन सुराही दर्शकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र बनी हुई है**

देशभर से जुटे प्रमुख संग्रहकर्ता और स्टॉल्स, अनोखी ऐतिहासिक सुराही बनी आकर्षण :-एसएनसी कोटा के इस प्रतिष्ठित आयोजन को सफल बनाने के लिए देशभर से आए नामचीन संग्रहकर्ताओं द्वारा 100 से भी अधिक स्टॉल्स लगाई गई हैं। प्रदर्शनी में राजाओं के जमाने की एक दुर्लभ प्राचीन सुराही दर्शकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र बनी हुई है। अपनी उत्कृष्ट कलाकृति और विशाल क्षमता के लिए प्रसिद्ध इस ऐतिहासिक सुराही में एक पूरी बाल्टी पानी समां जाता है, जिसे देखने के लिए दिनभर लोगों की भारी भीड़ उमड़ रही है। इस राष्ट्रीय प्रदर्शनी को आकार देने में सोसाइटी के फाउंडर सौरभ लोढ़ा एवं कॉ-फाउंडर शुभम लोढ़ा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यक्रम में सोसाईटी के संरक्षक आनंद राठी, नरेन्द्र कटियाल, उद्धबदास मरचुनिया सहित देश के प्रमुख संग्रहकर्ता निखिलेश सेठी, सुधीर तुलस्यान और अभिनंदन सेठी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रदर्शनी के पहले ही दिन विभिन्न प्रकार के दुर्लभ सिक्कों, ऐतिहासिक नोटों और प्राचीन स्टैम्प्स (डाक टिकटों) को देखने के लिए शहर के नागरिकों, विद्यार्थियों और इतिहास प्रेमियों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। दिनभर लोग भारत की इस अमूल्य धरोहर को करीब से देखने और इसके बारे में जानने के लिए उत्सुक नजर आए। आयोजकों ने सभी शहरवासियों से 31 अगस्त तक चलने वाली इस प्रदर्शनी का अवलोकन करने की अपील की है। सौरव लोढ़ा ने बताया कि प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य आम जनमानस और युवा पीढ़ी को देश के समृद्ध इतिहास, प्राचीन मुद्रा प्रणाली और दुर्लभ डाक टिकटों के ऐतिहासिक महत्व से रूबरू कराना है।

सादुलपुर : ताँबाखेड़ी में हंसियावास डेम के विरोध में किसानों का धरना जारी

धरने पर बैठे किसानों को छोटी बच्ची दिव्या पूनिया ने संबोधित किया

सादुलपुर, (निसं)। तम्बाखेड़ी में चल रहे किसान धरने पर छोटी बच्ची दिव्या पूनिया ने किसानों को संबोधित किया। तम्बाखेड़ी गांव में यमुना जल समझौता के तहत प्रस्तावित हंसियावास डेम के निर्माण और भूमि अधिग्रहण से पहले हंसियावास डेम किसान संघर्ष समिति का धरना प्रदर्शन लगातार जारी है। किसानों की मुख्य मांग है कि हरियाणा को पानी देने वाला डेम हरियाणा में ही बनाया जाए, या फिर इस डेम की भूमि अधिग्रहण होने की स्थिति में हरियाणा के भूमि अधिग्रहण के हिसाब से मुआवजा दिया जाए। 8 गांवों के किसान धरने पर बैठे हैं। समिति ने विधायक मनोज न्यांगली द्वारा विधानसभा में डेम का मुद्दा उठाने पर धन्यवाद प्रस्ताव भी पास किया है।

- **धरने पर बैठे किसानों की मुख्य मांग है कि हरियाणा को पानी देने वाला डेम हरियाणा में ही बनाया जाए**
- **या फिर इस डेम की भूमि अधिग्रहण होने की स्थिति में हरियाणा के भूमि अधिग्रहण के हिसाब से मुआवजा दिया जाए**

धरने में चुंबकीयागढ़ से राममूर्ति तरड, संतलाल, छिरंग, जयवीर बेनीवाल, राजेंद्र सिहाग, ताम्बाखेड़ी से सुनील पूनिया, भलेराम, लेखराम, बजरंग, संदीप, सुरेश दुमकी, संतलाल, आशा राम, मंगलाराम, कृपाराम, धनोंटी से वीरसिंह, महिपाल, ढींगारड़ा से उमेद बुडानिया, दलीप राठौर आदि किसान बैठे हैं। इसी धरने पर छोटी बच्ची दिव्या पूनिया ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि जमीन हमारी माँ है, इसे कैसे छोड़ दें। बच्ची ने सरकार से गुहार लगाते हुए कहा कि किसानों की जमीन का सही दाम दो। दिव्या के इस संबोधन के बाद पूरे धरना स्थल पर जोश भर गया और किसानों ने जय किसान जय जवान के नारे लगाए। ग्रामीणों ने कहा कि जब एक छोटी बच्ची को भी अपनी जमीन की चिंता है तो सरकार को किसानों की पीड़ा समझनी चाहिए।

भरतपुर साइकिल क्लब का चार सदस्यीय दल जयपुर रवाना

राइड का उद्देश्य साइकिलिंग को बढ़ावा देने, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं हरित राजस्थान का संदेश जन-जन तक पहुंचाना है

भरतपुर, (निसं)। राजस्थान रोड राइडर्स, जयपुर द्वारा आयोजित जयपुर से बीसलपुर तक 150 किलोमीटर की साइकिल राइड में भरतपुर का प्रतिनिधित्व करने के लिए भरतपुर साइकिल क्लब का चार सदस्यीय दल भरतपुर से जयपुर के लिए रवाना हुआ। इस राइड का उद्देश्य साइकिलिंग को बढ़ावा देने के साथ-साथ जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं हरित राजस्थान का संदेश जन-जन तक पहुंचाना है।

जयपुर से बीसलपुर के बीच होने वाली इस राइड के दौरान भरतपुर साइकिल क्लब के सदस्य रास्ते में करंज, गुलमोहर, नीम एवं पापड़ी जैसे स्थानीय एवं शीघ्र विकसित होने वाले पेड़ों के बीजों का प्रसार करेंगे, ताकि आने वाले समय में इन क्षेत्रों में हरियाली को बढ़ावा मिल सके। बीसीसी सदस्य राकेश सिंघल एवं योगेश सक्सेना ने बताया कि यह राजस्थान रोड राइडर्स की छठी राइड है, जिसमें लगभग 205 साइकिलिस्ट जयपुर के अमर जवान ज्योति से बीसलपुर के लिए एक साथ रवाना होंगे। इस राइड की विशेष पहल के तहत प्रत्येक सदस्य द्वारा मार्ग में 205 पौधों के पौधरोपण का संकल्प लिया गया है।

उन्होंने बताया कि साइकिलिंग के माध्यम से स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण एवं जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना इस आयोजन का प्रमुख उद्देश्य है। भरतपुर साइकिल क्लब भी लगातार साइकिलिंग के साथ सामाजिक एवं पर्यावरणीय गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इस राइड में भरतपुर का प्रतिनिधित्व बीसीसी संरक्षक लोकेश अग्रवाल तथा सदस्य जीवन जैन, राकेश सिंघल एवं योगेश सक्सेना करेंगे।

भरतपुर साइकिल क्लब के सदस्यों ने कहा कि साइकिल चलेगी तो सेहत भी सुधरेगी और पर्यावरण भी बचेगा। जल संरक्षण और हरित राजस्थान के संदेश के साथ यह राइड लोगों को पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित करेगी।

छात्राओं ने रंगोली से मतदान का संदेश दिया

स्वीप कार्यक्रम के तहत मतदाता जागरूकता अभियान चलाया

गंगापुर सिटी, (निसं)। नगरीय निकाय आम चुनाव-2026 को लेकर मतदाता जागरूकता अभियान के तहत शनिवार को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक स्कूल में रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई।

नगर परिषद गंगापुर की टीम ने स्वीप कार्यक्रम के तहत आयोजित प्रतियोगिता में छात्राओं ने रंग-बिरंगी और आकर्षक रंगोलियां बनाकर मतदान के महत्व, लोकतांत्रिक मूल्यों और शत-प्रतिशत मतदान का संदेश दिया। प्रतियोगिता में छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने रंगों के जरिए मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने वाले संदेश उकेरे। रंगोलियों में 'पहले मतदान, फिर जलपान', 'मेरा वोट, मेरी जिम्मेदारी' और 'शत-प्रतिशत मतदान' जैसे प्रेरक संदेश प्रमुख रहे। छात्राओं ने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से मतदान को लोकतंत्र की मजबूती से जोड़ने का प्रयास किया।

नगर परिषद की टीम ने छात्राओं को मतदान के अधिकार और उसकी महत्ता के बारे में जानकारी दी। टीम ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने में प्रत्येक मतदाता की भूमिका महत्वपूर्ण है। छात्राओं से स्वयं जागरूक रहने के साथ ही अपने परिवार के सदस्यों और आसपास के लोगों को भी मतदान के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में मतदान के प्रति जिम्मेदारी और जागरूकता की भावना विकसित करना रहा। इसके साथ ही रंगोलियों के जरिए आमजन तक अधिक से अधिक मतदान का संदेश पहुंचाने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में स्कूल स्टाफ और छात्राएं उपस्थित रहीं।

राशिफल रविवार 30 अगस्त, 2026

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2083, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 3:45 तक, शूल योग रात्रि 3:46 तक, गर करण प्रात: 9:38 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और राजयोग सूर्योदय से रात्रि 3:45 तक है। आज भद्रा रात्रि 9:15 से आरम्भ होगी। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:43 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:02 से 3:37 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:46

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनगर्ल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

धनु
घर-परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी और अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है और मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

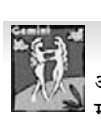

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ
स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आवश्यक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

वृश्चिक
आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता और योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।